विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में निम्नमध्यवर्गीय जीवन और यथार्थ : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग मानविकी संकाय में

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशिका

डॉ0 सुनीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

आलोक कुमार
नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध विषय की भूमिका

निम्नमध्यवर्गीय का योगदान समाज उत्थान में काफी सराहनीय रहा है। किसी भी क्षेत्र में निम्नमध्यवर्गीय बढ़–चढ़ कर भाग लेते रहे हैं, चाहे वह समाज निर्माण का या समाज विकास का कार्य हो या राष्ट्रोत्थान का। इसी को केन्द्र में रखकर विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं का अध्ययन करने की योजना है।

विनोद कुमार शुक्ल की कविता संग्रह 'लगभग जयहिंद', 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह', 'सब कुछ होना बचा रहेगा', 'अतिरिक्त नहीं' कहानी संग्रह 'पेड़ पर कमरा', 'महाविद्यालय', उपन्यास 'नौकर की कमीज', 'खिलेगा तो देखेंगे', 'दिवार में एक खिड़की रहती थी', इन सभी रचनाओं में साधारण मनुष्य की स्थिति एवं निम्न मध्य वर्गीय जीवन यथार्थ को जीवंत रूप में चित्रित किया गया है। निम्नमध्यवर्गीय की मनोवृति को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करते हुए, नवीन मूल्यों का निर्माण करने की क्षमता और निम्नमध्यवर्गीय यथार्थ की अभिव्यक्ति विनोद कुमार शुक्ल जी के साहित्य में मिलती है। इनकी सारी रचनाओं को मैं देखा हूँ और निम्नमध्यवर्गीय को चिन्हित किया हूँ।

उनका पहला काव्य संग्रह 'लगभग जयहिंद' (सन् 1971) में ही विनोद कुमार शुक्ल की यह आत्म स्वीकृति है कि –

> "मैं अपनी पीठ को
> बहुत अच्छी तरह पहिचानता हूँ।"

अपनी पीठ की यह पहचान किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी परिस्थिति की पहचान है। विनोद कुमार शुक्ल की यह परिस्थिति पहचान है। विनोद कुमार शुक्ल की यह परिस्थिति उनका निम्नमध्यवर्गीय संस्कार और परिवेश है। इनका

परिवेश इतना गहरा, इतना विशाल है कि जब इसका विस्तार करते हैं तो उनकी सजल आँखों के सामने का संसार इसी निम्नमध्यवर्गीय से निर्मित नजर आता है।

विनोद कुमार शुक्ल ने निम्नमध्यवर्गीय जीवन के मूलभूत वस्तु, साजो समान, घरेलू स्थितियों को कविताओं में उपस्थित किया है।

"यह जमीन पर गिरे
दो किलो चावल के एक एक दाने को बीनकर
मुहल्ले के लोगों के द्वारा
इकट्ठा करने का
इस तरह पेट से ज्यादा
समूह की ताकत बढ़ाने का हिसाब है।"

इनकी कविताओं में एक बात जो उभरकर सामने आती है, वह यह है कि इनका भावबोध अपनी नैतिक संवेदनशीलता तक ही सीमित नहीं है। वे आदमी, उसके परिवेश, उसके वस्तु और इन सबको नियमित और नियंत्रित करने वाली शक्तियों के प्रति काफी सजग हैं। यह सजगता उनकी मानवीय उदारता को स्पष्ट करती है।

आधुनिक हिंदी उपन्यास साहित्य में विनोद कुमार शुक्ल का स्थान उल्लेखनीय है। उन्होंने निम्नमध्यवर्गीय जीवन यथार्थ को अपने उपन्यासों में केन्द्रीत किया है। निम्नमध्यवर्गीय परिवार के जीवन में व्याप्त अभाव, सुख, दुःख आदि का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। अपनी युवा मनोवृति की संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति के लिए विनोद कुमार शुक्ल ने उपन्यास लिखना आरंभ किया।

'नौकर की कमीज' (सन् 1979) उपन्यास विनोद कुमार शुक्ल का प्रकाशन क्रम की दृष्टि से प्रथम उपन्यास एवं बहुचर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास भारतीय निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ एवं आदमी का कशमकश को प्रकट करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास की ओर संकेत करते हुए ज्योतिष जोशी लिखते हैं – **"इस उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय भारतीय परिवार के एक क्लर्क की यातना को दिखाते हुए भारतीय व्यवस्था की विडंबना को तार–तार कर दिया है। इसके साथ–साथ यह उपन्यास अहसान फरामोश लोगों पर सीधा प्रहार ही नहीं करता बल्कि छोटे –छोटे वाक्यों के सहारे व्यंग्यात्मक शैली में एक माहौल भी तैयार करता है।"**

इस उपन्यास का मुख्य मात्र संतू बाबू है। ये निम्नमध्यवर्गीय भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करते है। संतू बाबू एक दफ्तर में काम करते हैं, वेतन कम होने के कारण उन्हें आर्थिक तंगी से जूझना पड़ता है। इसलिए अपने घर में वे मनपसंद चीजों को भी नहीं ला सकते हैं। अपनी इच्छा, आकांक्षाओं का दमन करते हैं। वे अपने कम वेतन को कटघरा मानते हैं। इसीलिए वे कहते हैं– **"मेरा वेतन एक कटघरा था, जिसे तोड़ना मेरे वस में नहीं था। यह कटघरा मुझमें कमीज की तरह फीट था, और मैं अपनी पूरी ताकत से कमजोर होने की हद तक अपना वेतन पा रहा था। मैं इस कटघरे में सुराख कर सिनेमा देखता था, या स्वप्न।"**

निम्नमध्यवर्गीय परिवार के व्यक्ति संतू बाबू की अभिलाषा, सपने और जीवन की उम्मीदों के बीच जिए जाने का कोई नाम नहीं दिया जा सकता। यह हमारी निम्न मध्यवर्ग जीवन की विडम्बना है। विनोद कुमार शुक्ल ने इस उपन्यास के माध्यम से चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ हो रहे शोषण तथा आर्थिक तंगी से उपजी विद्रोह मानसिकता को चित्रित किया है।

इसी प्रकार इनका दूसरा उपन्यास **'खिलेगा तो देखेंगे' (सन् 1996)** में भारतीय निम्नमध्यवर्गीय परिवार के सहज सादगीपूर्ण जीवन को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में निम्नमध्यवर्गीय परिवार के सदस्य हैं विनोद कुमार शुक्ल ने इस उपन्यास में परिवार के आपसी प्यार, अपनापन, संवेदना, आत्मीयता तथा भावनाओं को प्रस्तुत किया है, जो पाठक वर्ग को निम्नमध्यवर्गीय परिवार के प्रति सोचने के लिए विवश कर देता है। इस उपन्यास की ओर संकेत करते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ0 नामवर सिंह जी लिखते हैं – **"'खिलेगा तो देखेंगे' यह आदिवासियों के गाँव के, उसके अड़ोस–पड़ोस और सहज सादगीपूर्ण रोजमर्रा जिंदगी को चित्रित करता है।"**

निम्नमध्यवर्गीय परिवार के पास खुशी के अनेक लम्हें होते हैं जो जीवन से दूर नहीं बल्कि पास है और इन्हीं क्षणों को विनोद कुमार शुक्ल ने अपने उपन्यासों में संग्रहित किया है। इस संदर्भ में विष्णु खरे जी लिखते हैं – **"भारतीय निम्न मध्यवर्ग को लेकर जितनी गहरी निगाह, समझ और सहानुभूति विनोद कुमार शुक्ल के पास है उतनी और किसी उपन्यासकार में दिखाई नहीं देती। मेरे मन में इसे लेकर जरा भी संदेह नहीं है कि फणीश्वरनाथ रेणु के बाद वे स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के सबसे बड़ें उपन्यासकार हैं।"**

विनोद कुमार शुक्ल ने अपने उपन्यास में नूतन भाषा सैद्धांतिक शिल्प के माध्यम से इसे रूचिकर एवं महत्वपूर्ण बना दिया है। इस प्रकार रचनाकार अपनी बनी बनायी परिपाटी को तोड़ते हुए उससे कहीं आगे निकल जाता है। साथ ही इनके उपन्यासों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन संघर्ष देखने को मिलता है।

इनका तीसरा उपन्यास '**दीवार में एक खिड़की रहती थी**' निम्नमध्यवर्गीय परिवार के सुख–दुःख की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। इस उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय परिवार का रहन–सहन, एक दूसरे के प्रति आत्मीयता, अपनापन

और उनका सहज सादगीपूर्ण जीवन, होने के बावजूद भी वे खुशी से अपना जीवन जी लेते हैं। उनके जीवन में न अहंकार है न स्वार्थ। उनमें तो केवल आत्मीयता और अपनापन ही दिखाई देता है। उसी के सहारे ये अपने अभावग्रस्त जीवन को भी खुशी से जी लेते हैं।

इस संदर्भ में विष्णु खरे लिखते हैं – **"विनोद कुमार शुक्ल के इस उपन्यास में कोई महान घटना, कोई विराट संघर्ष, कोई युगीन सत्य तथा कोई उद्देश्य या संदेश नहीं, क्योंकि इसमें वह जीवन है, जो इस देश की वह जिंदगी है जिसे किसी अन्य उपयुक्त शब्द के अभाव में निम्नमध्यवर्गीय कहा जाता है।"**

विद्वानों की ऐसी धारणा है कि जिस लेखक की संवेदना जितनी विस्तृत और गहरी होती है। वह उतना ही बड़ा लेखक होता है। विनोद कुमार शुक्ल का अतीत, वर्तमान और भविष्य से घनिष्ठ संबंध है जो प्रायः उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। अपनी कविता तथा उपन्यास के बाद कहानी में भी उन्होंने निम्नमध्यवर्गीय जीवन को केन्द्र में रखा है।

कहानियों के केन्द्र में निम्नमध्यवर्गीय जीवन एवं सामाजिक समस्याएँ हैं, विनोद कुमार शुक्ल की कहानियों में व्यक्ति आम समाज का साधारण व्यक्ति हैं। इनके अधिकांशतः कहानियों में गाँव से शहर की ओर विस्थापित युवा वर्ग जो पढ़ाई या नौकरी की तलाश में आया है, वहीं दूसरी ओर कस्बाई जीवन, निम्नमध्यवर्गीय जीवन के परिवेश को पूरी असलियत के साथ सामने लाता है।

इनकी कहानी **'रूपये' (1964)** यह एक युवा क्लर्क की कहानी है प्रस्तुत कहानी में विनोद कुमार शुक्ल जी ने युवा क्लर्क की संदिग्ध मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण किया है। इस युवा क्लर्क के घर की हालत कुछ खास नहीं है। उसका वेतन भी बहुत ही कम है। उसे हर महीने अपने घर मनिऑर्डर करना पड़ता है और बचे हुए पैसे अपना महीना गुजरना पड़ता हैं उसके रूपये खो

जाने के बाद उसकी मानसिकता बदल जाती है। उसे चिंता है अपने परिवार की। वह अविवाहित है। वह किसी भी हालत में अपने परिवार को भेजे जाने वाले रूपयों में कमी नहीं करना चाहता। खोए हुए रूपये मिल जाने के बाद उसकी मानसिकता बदल जाती है और उसकी चिंता समाप्त हो जाती है। विनोद कुमार शुक्ल ने आम लोगों की नजर में साधारण दिखने वाली घटना को बड़े ही बखूबी ढंग से प्रस्तुत करते हुए निम्नमध्यवर्गीय क्लर्क की मानसिकता को पकड़ने का प्रयास किया गया है।

इसी प्रकार विनोद कुमार शुक्ल '**टुकड़ा**' **(1957–58)** कहानी में बेचैनी से ग्रसित युवा मानसिकता को उल्लेखित किया है ये युवा निम्नमध्यवर्गीय परिवार का पात्र है। उसे पीतल का टुकड़ा भी सोने का लगता है। वह टुकड़ा उसे जब से मिला है तब से वह बेचैन है। वह उस टुकड़े को बेचकर अपने जीवन के अभावों को कुछ हद तक खत्म करना चाहता है। लेकिन अंत में वह टुकड़ा पीतल का निकलता है तो वह काफी उदास हो जाता है।

'महाविद्यालय', 'पेड़ पर कमरा', 'टुकड़ा आदमी', 'आदमी की औरत' नामक कहानियों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन यथार्थ को बहुत बारीकी से प्रस्तुत किया है। विनोद कुमार शुक्ल की कहानियाँ अपने मामूलीपन में बेहद मार्मिक, विलक्षण और अद्वितीय है। विनोद कुमार शुक्ल की सभी कहानियों में निम्नमध्यवर्गीय युवाओं की संघर्षरत संवेदना को प्रस्तुत किया गया है।

शोध का उद्देश्य :–

विनोद कुमार शुक्ल अपनी रचनाओं में मूलरूप से निम्नमध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करने वाले रचनाकार हैं। यद्यपि ये अपनी रचनाओं में सभी वर्गो की ओर लेखनी चलाई है। इनकी रचनाओं में ऐसी शक्ति है, जो स्वतः मन को सोचने के लिए जागृत कर देती है। ये अपने साहित्य में निम्नमध्यवर्गीय जीवन को भली भाँति दिखाया है। मैं शोध में निम्न बिन्दुओं को दिखाने का प्रयास करूँगा –

- विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को जानना।
- विनोद कुमार शुक्ल के कहानियों में निम्नमध्यवर्गीय परिवार के जीवन को स्पष्ट रूप से दिखाना।
- विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में भारतीय निम्नमध्यवर्गीय परिवार के जीवन का सहज चित्रण करना।
- विनोद कुमार शुक्ल की कहानियों में मामूलीपन में बेहद मार्मिकता और द्वितीय विलक्षण का चित्रण करना।
- विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में जिंदगी की तमाम विसंगतियों तथा मानवीय मार्मिक स्थितियों को दिखाना।

शोध का महत्व :

विनोद कुमार शुक्ल का व्यक्तित्व तथा कृतित्व में संवेदनशील व्यक्तित्व मानस का सचेतन उपस्थिति होता है। विनोद कुमार शुक्ल इस मध्यवर्ग के सचेत प्रवक्ता है। निम्नमध्यवर्गीय के जीवन यथार्थ को दिखाना, आम आदमी का शोषण और पीड़ा को चित्रित करना, गरीबों, मजदूरों की व्यथा, अशिक्षा, स्त्री जीवन के

यथार्थ को अपनी रचनाओं में उल्लेख किया है, जिसे विस्तार से अन्वेषण कर एक मूर्त रूप दिया जायेगा।

शोध की परिकल्पना :

विनोद कुमार शुक्ल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को पाठक वर्ग से अवगत कराने का काम किया है। अपनी युवा मानसिकता की संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति को रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज के निम्नमध्यवर्गीय जीवन को दर्शाया है। ये अपनी रचनाओं में अपने युग की पीड़ा, विसंगतियों, अंतर्विरोधों और सामाजिक विडम्बनाओं आदि की समस्याओं को पाठक वर्ग तक पहुँचाने का कार्य किया है। इस प्रकार इस तरह के विचार रखने वाले निम्नमध्यवर्गीय जीवन और यथार्थ को हम विनोद कुमार शुक्ल जैसे साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से जान सकते हैं। इनकी रचनाओं में निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को सामने पटल पर लाने का प्रयास होगा।

शोध की प्रासंगिकता :

विनोद कुमार शुक्ल के व्यक्तित्व बेहद संवेदनशील, साधारण रहन–सहन, स्वाभाविकता, सहज भाषा, प्रकृति प्रेम और शालीनता से मिलकर निर्माण हुआ है। विनोद कुमार शुक्ल की यही साधारण व्यक्तित्व इनकी कृतियों में भी देखने को मिलता है। विनोद कुमार शुक्ल की रचनाएँ अपने समय और समाज की गहरी समझ है। उनका भाव बोध और विचार बोध, उनके रचना शिल्प को एक नयी रूपरेखा प्रदान करता है। विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में निम्नमध्यवर्गीय जीवन और यथार्थ बोध को भली भाँति संजोया है। इनकी रचनाओं के माध्यम से पाठकों को नयी सोच तथा स्वाभाविकता, शालीनता आदि सहज रूप में पायी जाती है, जिसे शोध कार्य में स्पष्ठ नजर आने की सम्भावनाएँ बनती है।

शोध कार्य की पद्धति :

वर्णित शोध कार्य में विनोद कुमार शुक्ल के सकल साहित्य का गहन अध्ययन एवं चिंतन किया जाएगा। शोध विषय की दृष्टि से विनोद कुमार शुक्ल की कविता, कहानी, उपन्यास के निम्नमध्यवर्गीय जीवन और यथार्थ को प्रस्तुत कर शोध करने का प्रयत्न किया जाएगा। शोध कार्य से संबंधित हिंदी के विद्वानों के साथ विचार–विमर्श के द्वारा विचारधारा को उन्नत करने का प्रयास किया जाएगा।

निम्नलिखित पद्धतियों को यथासम्भव अपनाकर शोध कार्य करने की योजना हैः–

A. साक्षात्कार विधि
B. आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक विधि
C. सर्वेक्षण विधि
D. शोध पत्र
E. लेख, आलेख
F. पुस्तकावलोकन
G. सहायक सामग्री, पुस्तकालय अवलोक
H. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

शोध कार्य के पूर्व अध्ययन :

प्रस्तावित शोध कार्य विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में निम्नमध्यवर्गीय जीवन और यथार्थ बोध पर गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा। इस विषय पर निम्नलिखित शोध कार्य हुए हैं :–

1. कवि एवं कथाकार विनोद कुमार शुक्ल का सृजनात्मक वैशिष्टय– छत्रपति शिवाजी महराज विश्वविद्यालय, पनवेल, नवी मुंबई, महाराष्ट्र, वर्ष 2014

2. विनोद कुमार शुक्ल व्यक्ति और साहित्य – सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट, गुजरात, वर्ष 2017

3. निम्नमध्यवर्गीय जीवन और विनोद कुमार शुक्ल के साहित्य की अभिनवता हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उत्तर प्रदेश, वर्ष 2020

4. विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध – वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तरप्रदेश, वर्ष 2023

5. विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में सैद्धांतिक अध्ययन – स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विद्यापति, विश्वविद्यालय, नांदेड़, महाराष्ट्र, वर्ष 2023

अन्वेषण कार्य की सुविधा को देखते हुए निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करने की योजना है :–

<u>अध्यायीकरण</u>

प्रथम अध्याय : विनोद कुमार शुक्ल का परिचय :

1.1 व्यक्तित्व

1.2 कृतित्व

द्वितीय अध्याय : विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में समाज की परिकल्पना

2.1 साहित्य और समाज का अंतःसंबंध

2.2 निम्न वर्ग की परिकल्पना

2.3 निम्न मध्यम वर्ग की परिकल्पना

2.4 मध्यम वर्ग की परिकल्पना

2.5 उच्च वर्ग की परिकल्पना

तृतीय अध्याय : विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में निम्नमध्यवर्गीय जीवन

3.1 'लगभग जयहिंद' काव्य–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन।

3.2 'वह आदमी चला गया गरम कोर्ट पहिनकर विचार की तरह' काव्य–संग्रह में निम्न–मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

3.3 'सब कुछ होना बचा रहेगा' काव्य–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन का दर्द

3.4 'अतिरिक्त नहीं' काव्य–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन की समस्या

3.5 ‘आकाश धरती को खटखटाता है’ काव्य संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय समाज की विसंगति

3.6 ‘कभी के बाद अभी’ काव्य–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन की अनुभूति

चतुर्थ अध्याय :– विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन

4.1 ‘नौकर की कमीज’ उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय समाज

4.2 ‘खिलेगा तो देखेंगे’ उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

4.3 ‘दीवार में एक खिड़की रहती थी’ उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय समाज की समस्या

4.4 ‘हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़’ उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय जीवन की पीड़ा

4.5 ‘यासि रासा त’ उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय जीवन की अनुभूति

पंचम् अध्याय : विनोद कुमार शुक्ल की कहानियों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन यथार्थ बोध

5.1 ‘पेड़ पर कमरा’ कहानी–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय समाज में विसंगति

5.2 ‘महाविद्यालय’ कहानी–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन की परिस्थिति

5.3 ‘एक कहानी’ कहानी संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय समाज

5.4 ‘घोड़ा और अन्य कहानियाँ’ कहानी–संग्रह में निम्नमध्यवर्गीय जीवन यथार्थ बोध

षष्टम् अध्याय : विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं में भाषा और शिल्प

6.1 विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में भाषा और शिल्प

6.2 विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में भाषा और शिल्प

6.3 विनोद कुमार शुक्ल की कहानियों में भाषा और शिल्प

- **उपसंहार**

टिप्पणी – शोध कार्य करते समय अति आवश्यकता पड़ने पर कुछ संशोधन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- आधार ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- संदर्भ ग्रंथ
- पत्र पत्रिकाएँ
- वेब सामग्री
- पूर्ववर्ती शोधार्थियों द्वारा प्रकाशित शोध

शोध निर्देशिका
डॉ0 सुनीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता
आलोक कुमार
नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची